165
1679
H
P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 1679

1297
10/21

1679

राष्ट्रीय डंका अथवा स्वदेशी खादी

No. 15.

Rastriya Danka and Swadeshi Khadi
by Chandrika Prasad Jigyasu

प्रकाशक—हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय

सआदतगंज रोड, लखनऊ. १९३०

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
25 AUG. 1930

Hindu Social Reform Series No. 15.

ओ३म्

राष्ट्रीय डंका अथवा स्वदेशी खादी

[संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण]

संपादक
श्रीचंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु

प्रकाशक
हिंदू-समाज-सुधार-कार्यालय
सआदतगंज रोड, लखनऊ

मई, १९३० ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाँचवी बार ८०००] [मूल्य -)

मुद्रक—गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

सूचना—इस पुस्तक में ❀ इस चिह्न से चिह्नित गानों का कापीराइट रिज़र्व्ड है। बिना आज्ञा कोई मत छापें। (प्रकाशक)

891.431 R183 K

हिंदू-समाज-सुधार-माला की अपूर्व पुस्तकें !!!

हिंदू-समाज-सुधार-माला की सचित्र पुस्तकों का हिंदू-समाज में इतना अधिक मान क्यों हुआ ? इसका उत्तर यही है कि इनके मनोहर गाने घर-घर में आर्य-हिंदू ललनाएँ और कन्याएँ बड़े प्रेम से गाती हैं। लोग सैकड़ों की संख्या में मँगाकर इन्हें पुत्र-पुत्रियों एवं बहुओं को देते, कन्या-पाठशालाओं में बाँटते तथा ब्याह-शादी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं। प्रचारार्थ सौ पुस्तकें ३=) में दी जाती हैं।—

ईश्वर-विनय ... -)	होली हिंदू-सुधार ... -)
नारी-संगीत-रत्न (प्रथम भाग) -)	अछूत-पुकार ... -)
नारी-संगीत-रत्न (द्वितीय भाग) -)	राष्ट्रीय डंका व स्वदेशी खादी -)
सीता-सती ... -)	क़ौमी डंका (उर्दू में) ... -)
सोहागरात के वादे ... -)	'स्वतंत्र भारत' का सिंहनाद ... -)
अनमेल-विवाह ... -)	भजन कुरीति-निवारण ... -)
विधवा-विलाप ... -)	द्विजाति कौन हैं ? ... -)
कन्या-संगीत-रत्न ... -)	सावित्री-सत्यवान ... =)
औंधी खोपड़ी और घोंघाबसंत -)	नारी-संगीत-रत्न (चारो भाग) ।=)
वेश्या-दोष-दर्शन ... -)	साम्य-तत्त्व (हिंदूदृष्टि से साम्यवाद) ॥=)
जुआ-दोष-दर्शन ... -)	"आर्य और वेद" ॥।=), सजिल्द १)
नशा-दोष-दर्शन ... -)	श्रीमद्भगवद्गीता(सचित्र) =)व=)

आवश्यक सूचना—सावधान ! सावधान !! लोभ में आकर कोई महाशय हिंदू-समाज-सुधार-माला की पुस्तकों के गाने चुराने वा दूसरी लिपि में छापने की चेष्टा न करें, अन्यथा वे न्यायालय से दंडित होकर भारी हानि उठावेंगे !!!

प्रचारकों और बुकसेलरों की हर जगह ज़रूरत है।

कमीशन बहुत अधिक दिया जाता है। पत्र भेजकर मालूम करें।

पता—संचालक, हिंदू-समाज-सुधार-कार्यालय
सआदतगंज रोड, लखनऊ

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 1679
Date 20.1.72
GOVT. OF INDIA

❀ ओ३म् ❀

राष्ट्रीय डंका अथवा स्वदेशी खादी

१. वंदेमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्
शस्य-श्यामलाम् मातरम् । वंदे०

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित्त-द्रु म-दल-शोभिनीम्
सुहासिनीम्, सुमधुर-भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वंदे०

त्रिंश कोटि कंठ कलकल-निनाद-कराले,
द्विंत्रिंश कोटि भुजैर्धृ त खरकरबाले ।
के बोले मा, तुमि अबले ?
बहु-बल-धारिणीम्, नमामि तारिणीम्,
रिपु-दल-वारिणीम् मातरम् । वंदे०

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वंदे मातरम्

२. राष्ट्रीय झंडा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा। टेक

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला;
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा। झंडा॰
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में;
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए भय-संकट सारा। झंडा॰
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय;
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा। झंडा॰
आओ प्यारे वीरो आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ;
एकसाथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत-देश हमारा। झंडा॰
इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए;
विश्व-विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा। झंडा॰

३. क़व्वाली (चेतावनी)

जागो, हुआ सबेरा, गांधी जगा रहा है।
यह आत्म-बल-प्रवर्द्धक, शुभ-काल जा रहा है॥
अन्याय की निशा से, अंधेर से न डरना।
सूरज-स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है॥
सुस्ती के बिस्तरे से, फुरती से उठ खड़े हो।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है॥
हो नौजवान तुमको, जग जाना चाहिए अब।
सोने दो वृद्धजन को, आलस्य आ रहा है॥
यह दासता तो सुख का सपना है, भ्रम है "योगी"।
स्वाधीनता के सुख का अवसर ये आ रहा है॥

—राष्ट्रीय योगी

४. राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥ १॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥ २॥
अँगरेजों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आज़ादी का मंतर, सिखलाया वीर जवाहर ने॥ ३॥
दे दे स्पीचें ज़िंदा-दिल, कमज़ोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में ख़ूँ आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥ ४॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है ख़ाक विदेशों की।
समता स्वतंत्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥ ५॥
पूँजीपति ज़मींदार करते हैं, ज़ुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥ ६॥
हिंदू मुसलिम सिख जैन इसाई पार्सी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का भेद-भाव, मिटवाया वीर जवाहर ने॥ ७॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिससे युवकों का मुर्दा-दिल, चमकाया वीर जवाहर ने॥ ८॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग-विलासों में।
युवकों की शक्ती को एकदम, उकसाया वीर जवाहर ने॥ ९॥
आदर्श-चरित से वह अपने, युवकों का है सम्राट् बना।
आज़ादी का ऊँचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने॥ १०॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आँखों में उसकी।
देखा जिसको इक पल-भर में, अपनाया वीर जवाहर ने॥ ११॥
गांधी जब आशिष दे बोले—"ख़ुद क्लर्क बनूँगा मैं तेरा"।
तब सेहरा राष्ट्रपती का सिर, बँधवाया वीर जवाहर ने॥ १२॥
लखकर "प्रकाश" अब भारत का, अचरज में डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, मुसकाया वीर जवाहर ने॥ १३॥

५. खादी का डंका ❀

खादी का डंका आलम में, बजवाया दिया गांधी बाबा ने।
मैनचेस्टर लंकेशायर को, हिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी वस्त्रों को पहनो तुम, दो छोड़ विदेशी कपड़ों को।
यह पाठ भलो विधि से हमको, पढ़वा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी धोती, गांधी टोपो, खादी का कुरता औ धोती।
ओढ़ना बिछौना खादी का, करवा दिया गांधी बाबा ने॥
मनहूस विदेशी कपड़ों की, जलवा दी भारत में होली।
शुभ चलन स्वदेशी खादी का, चलवा दिया गांधी बाबा ने॥
जो पहन सारियाँ परदेशी, चलती थीं भारत की नारी।
खादी से उनका सुंदर तन, सजवा दिया गांधी बाबा ने॥
सिर से पैरों तक है खादो, खादी के श्वेत समंदर से।
है आज ज़माने के दिल को, दहला दिया गांधी बाबा ने॥
खादी की भक्ती बम से भी, है अधिक काम करनेवाली।
खादी का गोला भारत को, दिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
अब त्याग विदेशी वस्त्रों को, पहनो "दिनेश" देशी खादी।
खादी का झंडा भारत में, गड़वा दिया गांधी बाबा ने॥

६. इन गांधी टोपीवालों ने

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपीवालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
सदियों की ग़ुलामी में फँसकर, अपने को भी जो भूले थे।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधो टोपीवालों ने॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के।
सर्वस्व-त्याग का मंत्र दिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देश-द्रोही बनकर।
उनको सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥

पट बंद हुए कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरख़े-सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपीवालों ने॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बिललाते हैं।
खादी से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपीवालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण-पियारे हैं।
नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर ग़ुलामी की तोड़ो।"
माना गांधी का कहना यह, इन गांधी टोपीवालों ने॥
है विकट समस्या आगे जो, उसको भी हल करना होगा।
ज़रिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
युवकों के हृदय-दुलारे हैं, आँखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपीवालों ने॥
ख़ुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपीवालों ने॥

श्रीविष्णुमित्र विद्यार्थी "दग्ध" ('भारत से उद्धृत)

७. चरख़ा *

चला दो चरख़ा हरएक घर में, ये चर्ख़ तब तुम हिला सकोगे।
बँधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे॥
हमारे चरख़े में ऐसा फ़न है, जो आज़कल की मशीनगन है।
वो मैनचेस्टर औ लंकाशायर का, जीत इससे क़िला सकोगे॥
रुई न भारत की हो रवाना, बने स्वदेशी का ताना-बाना।
इसी तर्ग से विदेशी बाणिज्य को, आप फाँसी दिला सकोगे॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब अपने बच्चे जिला सकोगे॥
मिला लो भाई गले लगाके, स्वदेश का तुम सबक़ पढ़ाके।
विदेशी चीज़ों को दो हटाके, तो चैन-'वंशी' बजा सकोगे॥

८. स्वदेशी-गान

[इस कविता पर श्रीबेनीमाधव खन्ना ने कवि को ४१) का पुरस्कार दिया]

जिएँ तो स्वदेशी बदन पर बसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो ॥ टेक ॥
पराया सहारा है अपमान होना,
ज़रूरी है निज शान का ध्यान होना।
है वाजिब स्वदेशी पै क़ुर्बान होना,
इसी से है संभव समुत्थान होना।
लगन में स्वदेशी की हर मर्दो ज़न हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० १ ॥

निछावर स्वदेशी पै कर मालो ज़र दो,
स्वदेशी से भारत का भंडार भर दो।
रहें चित्र से वह चकाचौंध कर दो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो।
स्वदेशी हो सज-धज, स्वदेशी चलन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० २ ॥

चलो इस तरह अपना चर्ख़ा चला दो,
मनो सूत की ढेरियाँ तुम लगा दो।
बुनो इतने कपड़े मिलों को छका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो।
स्वदेशी हो गुल औ स्वदेशी चमन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ३ ॥

न अतलस न मख़मल की हो चाह तुमको,
कपट-सिंधु की मिल गई थाह तुमको।
न अब कर सकेंगे वे गुमराह तुमको,
किसी की रही कुछ न परवाह तुमको।
फ़िदाए वतन अपना तन प्राण धन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ४ ॥

उठो कर्मवीरो, तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भी शांतिमय है।
प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है।
स्वदेशी हो पूजन, स्वदेशी भजन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ५ ॥
समर स्वत्व का वीरवर ठान दो तुम,
किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम।
ख़ुशी से स्वदेशी पै दे जान दो तुम,
बने जिस तरह मा को सम्मान दो तुम।
स्वदेशी हो जीवन, स्वदेशी मरन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ६ ॥
बनो कर्म-योगी न तुम कर्म छोड़ो,
ग़ुलामी की जंजीर चर्खे से तोड़ो।
मुसीबत उठाओ मगर मुँह न मोड़ो,
तपोबल से अन्याय का गर्व गोड़ो।
स्वदेशी हो पोषन, स्वदेशी भरन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ७ ॥
तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज त्राता,
तुम्हीं देश के भाग्य के हो विधाता।
तुम्हीं पर है सौ जाँ से क़ुर्बान माता,
तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता ?
जो साधन स्वदेशी हो, संकट शमन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ८ ॥
करो प्रण कि आज़ाद होकर रहेंगे,
जहाँ में कि बरबाद होकर रहेंगे।
सितमगर हो या शाद होकर रहेंगे,
कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे।
स्वदेशी हो "अख़तर", स्वदेशी कथन हो ॥ जिएँ तो स्वदेशी० ९ ॥

श्रीस्वामी नारायणानंदजी "अख़्तर"
(तरानए-हिंद से उद्धृत)

६. ग़ज़ल दादरा (चरखा) ❀

टेक—गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
इमें चरखे का मंतर बताय दिया है॥

शेर—जब से घर-घर में ये चरखे का चलाना छूटा;
बस उसी रोज़ से भारत का नसीबा फूटा।
आके परदेशियों ने ख़ूब खसोटा लूटा;
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा।
आँखों से पट्टी हटाकर गुलामी की,
मारग पुराना दिखाय दिया है॥ गांधी बाबा० १॥

शेर—कौन-सा घर था जहाँ चरखे नहीं चलते थे;
लाखों मन सूत इन्हीं चरखों से निकलते थे।
महीन मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे;
शुद्ध मज़बूत थे, सुख से उन्हें पहनते थे।
विलायत से आके राज जमा के,
हाय गोरों ने वह सुख नसाय दिया है॥ गांधी बाबा० २॥

शेर—ब्याह शादी में था दहेज़ में चरखे का चलन;
नारियाँ हिंदू-मुसलमान समझती थीं सगुन।
नेम से निश्य वे चरखे को चलाती थीं पुन;
सुख से भरपूर रहो, उससे निकलती थी धुन।
धर्म से हमने कैसे विमुख हो,
पापों में मन को लगाय दिया है॥ गांधी बाबा० ३॥

शेर—विदेशी सारियाँ, करेप व अद्धी मलमल;
हिंद के लोग गिरे देख उन्हें मुँह के बल।
नारियाँ लाज से घूँघट न जो उठाती हैं;
पहनके उनको साफ़ नंगी नज़र आती हैं।
डूब मरो तुम्हें लाज न आती,
पैसा व इज़्ज़त गँवाय दिया है॥ गांधी बाबा० ४॥

शेर—कुछ अभी ग़ौर करो हिंदू औ मुसलमानों ;
तलाक़ दे दो इन्हें, अपनी दशा पहचानों ।
चलाओ चरख़ा, तजो शौक़, वह दिन आएगा ;
स्वराज्य दौड़कर क़दमों में सिर नवाएगा ।
सूत के धागे में सारी है ताक़त,
"माधो" ने तुम को सुनाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ५ ॥

१०. "स्वतंत्र भारत" ❀

अहाहा गांधी के मुँह से निकला, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ।
सुना सभी ने सचेत होकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
विशाल लवपुर के लक्खी दल में, महासभा के वितान-तल में ।
कहा ये मोहन ने रावी-तट पर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
समय था उंतीस सन् का आख़िर, प्रमत्त थे राज-मद में शासक ।
सुनाया गांधी ने तब गरजकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
समीर में, नीर में, गगन में, वचन में, तन में, हरेक मन में ।
समा गया वह महा मधुर स्वर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
हरेक घर में मची हुई है, स्वतंत्रता की अजीब हलचल ।
ये कहते बच्चे गोहार करकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
स्वतंत्रता के लिये सभी के, दिलों में जलती है आग भारी ।
हैं देखते स्वप्न में भी पड़कर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
बनाए कुटिया स्वतंत्रता की, सपूत जेलों में रम रहे हैं ।
तपस्वी देखेंगे अब निकलकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरि अटक-कटक लों, बजेगा डंका स्वतंत्रता का ।
कहेंगे तेंतिस करोड़ मिलकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
उड़ेगा भूतल पै सबसे ऊँचा, विशाल झंडा स्वतंत्रता का ।
कहेंगे नर-नारि जग के लखकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत, रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत ।
"प्रकाश" बाँटेगा विश्व को फिर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥

११. सत्याग्रह कैसे रुक सकता है ? ❀

[लोकपूज्य महात्मा गांधी का अल्टिमेटम या सुधार की ११ शर्तें]

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा ।
प्रजा के आगे तुझे, सितमगर ! सर अपना अब तो झुकाना होगा ॥
१. नशीली चीज़ें शराब, गाँजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं ।
मिटाके इनकी ख़रीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥
२. हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा-बढ़ा करके लूटते हो ।
अब एक शिल्लिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा ॥
३. लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों ।
मुहकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा ॥
४. फ़िज़ूल-ख़र्ची, बिला ज़रूरत, जो फ़ौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर, तो आधा उसको, ज़रूर साहब ! घटाना होगा ॥
५. बड़े-बड़े, भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफ़सर ।
उसे मुआफ़िक़ लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा ॥
६. स्वदेशी कपड़े करें तरक़्क़ी, विदेशी कपड़े न आने पावें ।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा ॥
७. समुद्र-तट का जहाज़ी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के ।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रखकर चलाना होगा ॥
८. जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो, उन्हें न छोड़ें ।
बक़ाया क़ैदी पुलीटिकल सब, तुरंत साहब ! छुड़ाना होगा ॥
९. उठा लिए जायँ राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर ।
जो इकसौ चौबिस दफ़ा अलिफ़ है, उसे तो बिल्कुल मिटाना होगा ॥
अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफ़ा ऐसी सब उठाकर ।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा ॥
१०. मुहकमा खुफ़िया-पुलिस उठा दो, या कर दो उसको प्रजा के ताबे ।
११. हमें भी बंदूक़ और पिस्तल बरा हिफ़ाज़त दिलाना होगा ॥

["स्वतंत्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से उद्धृत

१२. ग़ज़ल स्वदेशी वस्तु ❀

वतन की उलफ़त से ही ज़ुबाँ पर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू।
सुना दो हिंदोस्ताँ में घर-घर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
यहीं की रूई यहीं की मलमल, यहीं का रेशम यहीं की मखमल।
न लंकशायर न मैनचेस्टर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
हुए इसी ख़ाक से ही पैदा, यह सर ज़मीं है तुम्हारी माता।
हो यह सदा सुनके क्यों मुक़द्दर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
फ़िज़ूल जप-तप से मुझको बतला, मिलेगा तुझको क्या ऐ बरहमन।
सबाब चाहे तो जाप जप यह, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
वतन से जिसको न हो मुहब्बत, न क़ौम की हो जिसे हिमायत।
सुना दो बुज़दिल को यह कड़ककर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
है चूर ज़ख़्मों से अपना भारत, लगाओ तुम मरहमे मुहब्बत।
इलाज इससे नहीं है बेहतर, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
महात्मा गांधी ने है बताया, विदेशी कपड़े उतार फेंको।
स्वदेशी चरखा, स्वदेशी करघा, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
सुना दो जाकर के जार्ज पंजुम को, है रिआया को देश का ध्याँ।
हो यह 'सदा' सुनके शाद-फ़रहाँ, स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥

१३. चक्र सुदर्शन चरखा ❀

चक्र सुदर्शनजी महराज, चरखा भी कहलानेवाले। टेक
हमारे जब से आए पास, नहीं हम करते पर की आस।
हो गए थे हम बहुत निरास, चिंता शोक मिटानेवाले॥ चक्र०॥
हम तो बने हुए थे दास, करते रहे विदेशी-आस।
तुमने किया विदेशी नाश, देश-उन्नति करवानेवाले॥ चक्र०॥
विदेशी की अब रही न चाह, भारत का धन लूटा आह।
तुमने हमें बताई राह, भारत-द्रव्य बचानेवाले॥ चक्र०॥
बताए तुमने भले उपाय, देश के दुख में हुए सहाय।
विदेशी-बायकाट बतलाय, हमें सुख के पहुँचानेवाले॥ चक्र०॥

धन्य भारत के प्राणाधार, आपको जो करता है प्यार।
उसी का करते हो उद्धार, भारत-कष्ट छुड़ानेवाले ॥ चक्र० ॥
हम थे बने हुए परतंत्र, तुमने आकर किया स्वतंत्र।
अच्छा पढ़ा कान में मंत्र, विद्यावान् बनानेवाले ॥ चक्र० ॥
तुमसे निकले उत्तम सूत, मोटा पतला औ मज़बूत।
विदेशी क्या जानें करतूत, अपनी धाक जमानेवाले ॥ चक्र० ॥
न भूलेंगे चरखे की तान, रहेंगे घट में जब तक प्रान।
इसी से भारत का उत्थान, होगा दुःख भगानेवाले ॥ चक्र० ॥
इन्होंने किया कपट-व्यवहार, नहीं है जिसका वारापार।
कर दिया तुमने हाहाकार, उन्हें नीचा दिखलानेवाले ॥ चक्र० ॥
चक्र सुदर्शनजी महराज, तुम हो भारत के सरताज।
"गंगा" कहते रक्खो लाज, भारत-मान बढ़ानेवाले ॥ चक्र० ॥

श्रीगंगाप्रसाद जायसवाल "गंगा"

१४. दादरा स्वदेशी गाढ़ा

टेक—मुझे गाढ़ा स्वदेशी मँगा दो सजन ॥ मुझे० ॥
शेर—काहिली फैल रही है जहान में सारे।
इसी के ख्याल से मेरे ख़याल हैं न्यारे ॥
तमाम दिन मेरा बेकार गुज़रता प्यारे।
मैं तो कातूँगी चरखा करूँगी भजन ॥ मुझे ० ॥
शेर—उसी का कोट औ कुरता क़मीज़ बनवाना।
उसी की धोतियाँ चादर बनाओ मनमाना ॥
उसी की टोपियाँ अचकन रज़ाई सिलवाना।
जो सुधारा चहो तुम अपना वतन ॥ मुझे० ॥
शेर—क़दर रुई की विलायत में लोग करते हैं।
इसी के ज़ोर से दुनिया को नहीं डरते हैं ॥
हमारे मुल्क से लेकर जहाज़ भरते हैं।
है ये नज़रों में हलकी पै भारी वज़न ॥ मुझे० ॥

१५. रसिया

टेक—पहनो खादी-गाढ़ा भाई, क्यों तुम रहे वृथा इतराय।
शाल-दुशाला माल विदेशी, मन से दूर हटाय।
फटी कमरिया देशी से लो, ओढ़ो गले लगाय॥ पहनो०
रुई कपास देश की अपनी, सूत लेव कतवाय।
उसी सूत से सुंदर गाढ़ा, खादी लो बुनवाय॥ पहनो०
माता बहनें बेटी-बहुएं, सबको दो सिखलाय।
कम-से-कम वे नित्य दो घड़ी, चरखा लेयँ चलाय॥ पहनो०
एक छटाँक सूत रोज़ाना, घर में लो कतवाय।
तौ सौ रुपया साल वस्त्र के, कोरे लेव बचाय॥ पहनो०
कुर्ते, टोपी और अँगरखे, उसके लेव सिलाय।
बंडी और गलेफ़ रज़ाई, पहनो ख़ूब अघाय॥ पहनो०
वस्त्र विदेशी पहन-पहनकर, क्यों धन रहे नसाय।
इसने हो हम सबको मित्रो, नीचे दिया गिराय॥ पहनो०
जो "दिनेश" खादी को मन से, तुम सब लो अपनाय।
गाढ़ा काम देय गाढ़े में, सोचो ध्यान लगाय॥ पहनो०

१६. ग़ज़ल दादरा

टेक—अब तो खादी से प्रेम बढ़ाओ पिया।
कही मानो विदेशी न लाओ पिया॥
शेर—अब विदेशी वस्त्र से मुझको भी नफ़रत हो गई।
देश की संपति विदेशों को बहुत-सी ढो गई॥
ज़रा भारत की दौलत बचाओ पिया॥ कही० १॥
शेर—अब स्वदेशी वस्त्र से अपना शरीर सजाइए।
और मेरे भी लिये सारी स्वदेशी लाइए॥
मुझे खादी की चादर उढ़ाओ पिया॥ कही० २॥
शेर—दीन दुखियों का यही दुख दूर कर सकती पिया।
गर्व भी परदेशियों का चूर कर सकती पिया॥

लाज अंगों की मेरी बचाओ प्रिया ॥ कहीं० ३ ॥
शेर—जब तलक ज़िंदा रहें, तन पर रहे देशी बसन ।
बाद मरने के उसी का चाहिए हमको कफ़न ॥
यह सँदेशा सबों को सुनाओ पिया ॥ कहीं० ४ ॥
शेर—चाहते हो देश की गर कुछ भलाई तो "दिनेश" ।
तुम स्वदेशी वस्त्र पहनो कर स्वदेशी ही सुवेश ॥
वीरता आप अपनी दिखाओ पिया ॥ कहीं० ५ ॥

१७. देश-भक्त का प्रलाप *

हमारा हक़ है, हमारी दौलत, किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी की ख़ाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर-अमर है, निसार तन-मन स्वदेश पर है।
हैं चीज़ क्या जेलो गन मशीनें, क़ज़ा का भी हमको डर नहीं है॥
न देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखी के दुख से जो दिल न रोवे।
ख़ुशामदी बनके शान खोवे, वो ख़र है, हरगिज़ बशर नहीं है॥
हुक़ूक़ अपने ही चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ ख़ुदग़रज़, किसी की भलाई मद्दे-नज़र नहीं है॥
हमारी नस-नस का ख़ून तूने, बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौन-सी तेरी पालिसी वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥
बहाया तने है ख़ूँ उसी का, है तेरे रग-रग में अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द, तू ही हक़ से, सितम ये है या क़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े-बड़े मिट गए सितमगर, क्या इसको तुझको ख़बर नहीं है॥
सँभल-सँभल अब भी आ लुटेरे, है तेरे पापों का अंत आया।
कि ज़ुल्म करने में तूने ज़ालिम, ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, ज़मीन औ आसमाँ हिला दें।
ग़लत है सकझे 'कमल' जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है॥

॥ इति, वंदे मातरम् ॥

'स्वतंत्र भारत' का सिंहनाद

संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष, भारतीय स्वतंत्रता के तपस्वी महारथी

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी

प्रकाशक—हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय

सआदतगंज रोड, लखनऊ. १९३०